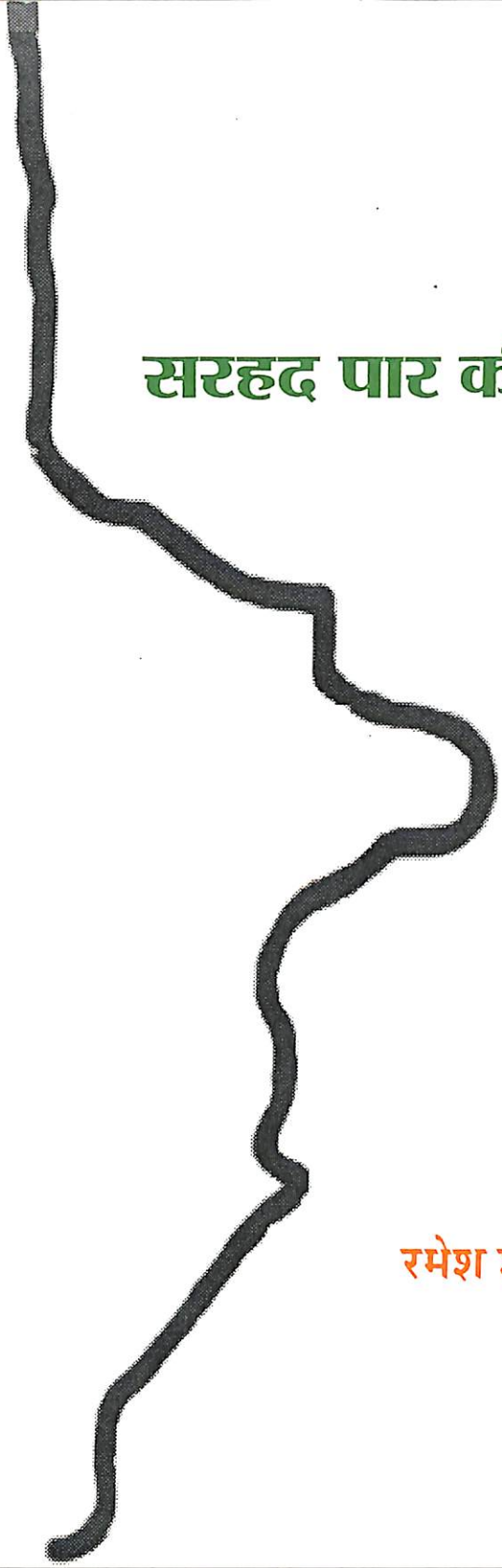

# सरहद पार की खुशबू

रमेश शर्मा

# भूल सुधार

कृपया निम्न पृष्ठों के अन्त में इन पंक्तियों को जोड़कर पढ़ें :

पृष्ठ 7 – की, फोटो खिंचवाए.
पृष्ठ 9 – में उभर कर सामने आ सकती है. विश्व शांति के लिए दक्षिण एशिया में शांति जरुरी है.
पृष्ठ 11 – खूब पंसद किया.
पृष्ठ 12 – मानने वालों के दिल में इस स्थान के प्रति एक विशेष आस्था है.
पृष्ठ 13 – रखा जाता है. विभिन्न कार्य सीखाने की भी व्यवस्था है. खेल के लिए अनेक मैदान हैं. हरियाली के साथ
पृष्ठ 17 – का 17 नवम्बर 1928 को देहांत हो गया. लाला लाजपत राय भवन पर आज भी दो
पृष्ठ 19 – परमात्मा सबको सद्‌बुद्धि दे.

पड़ोसी होते हुए भी पाकिस्तान हमसे कितना दूर है. हमारी सीमाएं जुड़ी हुई है बावज़ूद इसके अमेरिका, यूरोप जाना आसान रहा है, पाकिस्तान जाना बहुत कठिन. पांच दशक से दो सरकारें अपनी अकड़ में रही हैं. दो मुल्कों का सिद्वान्त मानकर भी दूरी बढ़ती गई. इसी मध्य युद्धों की श्रृंखला बनी. परस्पर द्वेष, घृणा, नफरत, दूरी को बढाने में, दुश्मनी की हद तक पहुंचाने में दोनों ओर की सरकारें तथा कुछ कट्टरपंथियों ने जोरदार ढंग से माहौल बनाए रखा. ज़ंग के रास्ते को मानने-अपनाने वाली सरकारें समय-समय पर ज़ंग करना और ज़ंग की बातें करना जारी रखे रहीं. हथियारों के व्यापारियों ने इसमें तेज़ी से घी डालकर आग को भड़काने  का काम किया. इससे उनका स्वार्थ सिद्ध होता है.

सीमा के आर-पार खून के रिश्ते सालों-साल दूर रहने को मज़बूर रहे. परिवार का एक अंश सीमा के इस पार तो दूसरा अंश सीमा के उस पार रहा. एक-दूसरे को मिले, देखे पांच दशक बीत गए. कुछ लोग जो सक्षम थे वे यूरोप में जाकर मिल सकते थे. बहन से भाई को मिले, मां को बेटी से मिले वर्षों बीत गए. भूगोल की दूरी कुछ मील भी नहीं बल्कि फर्लांग भर - मगर मिलने की दूरी पांच दशक.  कितने ही परिवार तड़पते रहे कि परस्पर मिलना हो. परन्तु सियासत, मज़हब, देश के नाम की दूरी ने इनकी दूरी को बढाकर रखा, मिलने नहीं दिया. पाकिस्तान के चार सूबे हैं - पंजाब, सिंध, बलुचिस्तान, सीमांत प्रांत (उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रांत NWFP) पंजाब, सिंध प्रांत की सीमाएं भारत से जमीन से जुड़ी हुई और सिंध की सीमा पानी (समुद्र) से भी जुड़ी हुई है.  अमृतसर-लाहौर की दूरी लगभग 50 कि.मी. है. कुछ गांव, कस्बों की दूरी तो पैदल राह की है.

सीमा से लगे ये गांव, कस्बे भी कितनी दूर रखे गए. इनको दूरे रखने के लिए दोनों ओर कुछ लोगों द्वारा मन, वातावरण बनाया गया. वे लम्बे समय तक सफल भी रहे. इसी मध्य अवाम के स्तर पर शांति, भाईचारा, सौहार्द की बातें भी यथाशक्ति (कहीं-कहीं) जारी रही. शांति, सौहार्द, भाईचारे की बात करने वाली आवाज़ें कभी-कभी मुखर होती रही. मगर बंटवारे के समय हुए कत्लेआम, दंगे, नफरत, द्वेष की आग सालों तक भुलाई नहीं जा सकी, बल्कि कुछ लोगों ने इस आग को जलाए रखने का काम किया और अपनी राजनैतिक, मजहबी स्वार्थ की रोटियां इस आग पर सेकते रहें. इस नफरत से ही वे गद्दी, सिंहासन पर पहुंचने का सपना बुनते रहे. लम्बे समय तक जंग की बात करनेवाली आवाज़ आज भी मौजूद है मगर जनता की आवाज के सामने उभरकर सामने नहीं आ पा रही हैं (अभी तक उन्होंने जनता को अंधेरे में रखकर दूरियां बढ़ाई).

पिछले कुछ वर्षो में जनता के दबाव तथा विश्व की बदलती परिस्थिति ने दोनों मुल्कों को मजबूर किया कि वे भिन्न सोंचे. कुछ प्रयास भी हुए. व्यक्तियों, संगठनों, समूहों ने दोनों ओर विभिन्न माध्यमों से अपनी आवाज भी उठाई. गीत, गजल, नाटक, फिल्म, बैठक, सभा, सम्मेलन, शिविरों के माध्यम से संपर्क, संवाद बढ़े.

बाघा बार्डर पर एक दशक पूर्व जब पहली बार कुलदीप नैयर, सुहास बोरकर, एन.डी पंचौली एवं रमेश शर्मा के आहवान पर कुछ गिने-चुने लोग जनतंत्र समाज की ओर से रात को 12 बजे चौकसी (VIGIL) के लिए पहुंचे तो एक अलग ढंग का माहौल, दबाब, भय अनेकों के मन पर छाया हुआ था. पाकिस्तान की ओर से भी कुछ साथी आने वाले थे मगर सीमा से दूर ही उन्हें रोक दिया गया. भारत की ओर कुछ दर्जन लोग हाथों में मशालें, मोमबती, लालटेन थामें हुए हिन्द-पाक दोस्ती जिन्दाबाद, शांति सौहार्द, भाईचारे के नारे 14 अगस्त की रात को बाघा बार्डर पर लगाते रहे. एक नये इतिहास की रचना हो रही थी. इसमें भारत सरकार ने कोई सुविधा तो नहीं दी लेकिन रूकावट पैदा नहीं की. इससे इतना उत्साह बढ़ा कि अगले वर्ष हज़ारों की संख्या में लोग बाघा बार्डर पर पहुंचे और पाकिस्तान की ओर भी बड़ी संख्या में आवाज़ उठी. दोनों ओर उठी इन आवाज़ों ने एक माहौल को जन्म दिया. अनेक संगठनों, व्यक्तियों का प्रयास जारी रहा कि दोनों देशों में शांति, भाईचारा, संवाद, संपर्क बढ़े.

दक्षिण एशिया बिरादरी भी इस तरह का एक संगठन है जो दक्षिण एशिया में शांति, सौहार्द, परस्पर आदान-प्रदान, व्यापार, संपर्क, संवाद बढ़ाने की मांग लम्बे समय से करता रहा है. लोक सेवक मंडल के मंत्री सत्यपाल के नेतृत्व में दक्षिण एशिया बिरादरी के माध्यम से एक बुलंद आवाज़ उठी है. पाकिस्तान में दक्षिण एशिया बिरादरी का एक मजबूत समूह है. दक्षिण एशिया बिरादरी अन्य संगठनों से भी व्यापक संपर्क बनाए हुए है. आज इसकी मुखर आवाज़ स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है. किसी ने ठीक ही कहा है कि दो भाई दूर जाकर रह सकते हैं मगर दो पड़ोसियों को तो साथ ही रहना पड़ेगा. भारत-पाकिस्तान को साथ ही रहने में समृद्धि एवं विकास प्राप्त हो सकता है. लड़ाई, दुश्मनी, नफरत से गददी, राजनैतिक सत्ता मिल गई हो मगर स्वराज्य, शांति, विकास दूर हुआ है. जनता को कोई लाभ नहीं मिला. गरीबी, भूखमरी, शोषण की चक्की में जनता पिस रही है. हर लड़ाई के बाद महंगाई, तनाव का दबाब जनता झेलती रही है. हथियारों की खरीद फरोख्त में जनता की गाढ़ी कमाई को अन्धाधुंध झोंका जा रहा है. सुरक्षा के नाम पर हथियारों की दौड़ जारी है, जिससे हम और अधिक असुरक्षित होते जा रहे हैं. जनता के सही मुद्दे, मसलें इनकी चपेट में आ रहे हैं. शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसरों की बलि हथियारों पर भेंट चढ़ा करके सुरक्षा के नाम पर जनता को धोखा दिया जा रहा है. अब जनता जाग रही है. हिन्द-पाक दोस्ती पर जनता आवाज उठा रही है. हिन्दुस्तानी-पाकिस्तानी अन्य देशों के मुकाबले अब एक-दूसरे के यहां ज्यादा आना जाना चाहते हैं. नई पीढ़ी के अनेक लोग भारत-पाक की जमीन को देखने के लिए उतावले हैं. क्योंकि जनता ने देख लिया कि सुरक्षा के नाम पर अणु बम बनाकर अपने पास रखनेवाले दोनों देशों के मध्य कारगील युद्ध हुआ और दोनों के अणुबम एक तरफ रखे रहे. हथियार, शांति अमन का माहौल बना ही नहीं सकते. यह शोषण, लूट, आतंक, हिंसा, कत्ल, मौत का द्वार ही खोलते हैं. इनसे दूर रहने में ही सुरक्षा है.

दक्षिण एशिया बिरादरी की ओर से सत्यपालजी के नेतृत्व में 23 लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल पाकिस्तान दौरे पर गया. प्रतिनिधि मंडल में पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, चंडीगढ़ के लोग शामिल हुए. बाद में लाहौर में आंध्रप्रदेश, असम, उत्तरांचल, कश्मीर के साथी भी मिल गए. प्रतिनिधिमंडल में प्रसन्न पातसानी (सांसद), बी.के. त्रिपाठी (सांसद), डॉ. मालती थापर (पूर्व मंत्री पंजाब), एडवोकेट

जे.सी. बत्रा, एडवोकेट जगत स्वरूप, गांधी शांति प्रतिष्ठान के रमेश शर्मा के साथ-साथ उड़ीसा के नृत्य कलाकार चितरंजन साहनी, कावेरी, पेंटर श्रीमती निताशा जैनी आदि शामिल रहे.

बाघा बार्डर पर प्रतिनिधिमंडल का शानदार स्वागत हुआ. लाहौर-फैसलाबाद के साथी बड़ी संख्या में बॉर्डर पर पहुंचे. गुलाब के पुष्पों की मालाओं से एक ओर प्रतिनिधिमंडल का भव्य स्वागत हो रहा था तो दूसरी ओर ढोलक की थाप पर भंगड़ा नृत्य भी चल रहा था. सीमा पर उत्साह एवं उत्सव का माहौल बना हुआ था. प्रतिनिधिमंडल को बाघा बॉर्डर पैदल पार करने की इजाजत मिली थी. इसलिए सीमा को पैदल पार करते हुए साथियों में उत्साह एवं आश्चर्य था. भंगड़ा टीम आगे-आगे तथा प्रतिनिधिमंडल के साथी गुलाब की खुशबू में डूबे आगे बढ़ रहे थे. ऐसे गर्मजोशी से स्वागत हुआ कि पहली बार पाकिस्तान जा रहे साथी खुशी एवं आश्चर्य से ओत-प्रोत हो गए.

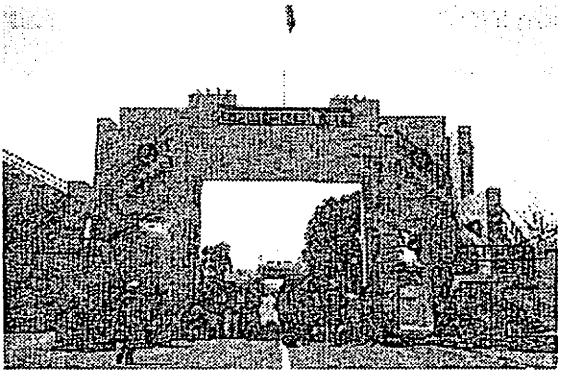

*अटारी-बाघा बॉर्डर : पाकिस्तान जाने की तैयारी*

साथियों को लग रहा था सीमा पार करते ही क्या नया नजर आएगा. भव्य स्वागत ने एक नयापन ला दिया. अपनेपन की धारा के साथ सभी ताजा हो गए. भावुकता के यह पल सबको अपने में समेट रहे थे. सीमा पार के भाई-बहन उत्साह में स्वागत में लगे थे. सीमा पर हलचल है. दर्जनों कुली किशमिस की पेटियां ट्रकों से उतारकर पंक्तिबद्ध ढंग से भारत की सीमा की ओर बढ रहे हैं. भारत की ओर भी कुलियों की पंक्ति लगी है और एक-दूसरे से पेटी लेते हुए सामान को भारत पहुंचाया जा रहा है. यह दृश्य देखकर बहुत अच्छा लगा.

सीमा पार करते ही एक बढ़िया किस्म की ए.सी. बस हमारा इंतजार कर रही थी. हम अनेक पाकिस्तानी साथियों के साथ बस में चढ़े. अनेक कारों सहित हमारा काफिला लाहौर की ओर बढ़ा. नहर के किनारे बनी सड़क से होते हुए हम मॉडल टाउन पहुंचे. मॉडल टाउन में दोपहर के भोजन के साथ पुनः सबका स्वागत हुआ. उर्दू, पंजाबी अल्फाजों से भरी हिन्दी में बातचीत का दौर शुरू हुआ. पाकिस्तान के इस भाग में पंजाबी बोली जाती है. भारत की पंजाबी और पाकिस्तान की पंजाबी में मुख्य अंतर लिखने का है. हम गुरूमुखी में लिखते हैं वे अरबी लिपि में. जो लोग उर्दू पढ़ना जानते हैं उनके लिए वहां कोई दिक्कत नहीं. बोलने में, खाने में, पहनावे में, उठने में, बैठने में, गाने में सब कुछ एक जैसा. पंजाब आजादी के समय दो हिस्सों में बंटा. फिर हरियाणा बना, कुछ समय बाद हिमाचल भी बन गया. मगर कमोबेश एक जैसा ही माहौल रहा है. दूरी के कारण भाव, वेष-भूषा-भाषा-भोजन में थोड़ा अंतर तो स्वाभाविक है. कहावत भी है कि हर दस कोस पर पानी तथा हर बीस कोस पर वाणी में बदलाव आ जाता है. प्राकृतिक इस बदलाव को छोड़कर शेष सब मिला-जुला ही है.

भोजन में लाहौरी नान का एक खास स्थान है. भटूरे जिन्हें लाहौर में पूरी कहा जाता है. तंदूरी रोटी, छोले, सब्जी, दाल, हलवा सभी अपनी ही तरह के हैं. मांसाहार में - गोश्त, मुर्गा आदि का प्रयोग खूब करते हैं. भटूरे (पूरी), परांठों का साईज हमारे से दुगना है. लोगों का साईज भी पंजाब की तरह अच्छा है. कदकाठी में लोग तगड़े हैं.

महिलाएं पंजाबी सूट खूब पहनती हैं. महिलाएं गाड़ी चलाती खूब नजर आतीहैं. बाजारों में महिलाओं का आना जाना खूब है. शहरों में महिलाओं ने अपना स्थान बनाया है. राजनीति, शिक्षा, कानून, व्यापार में भी महिलाओं का योगदान नजर आता है. जब हम चेनाब टेक्सटाइल की फैक्ट्री घूमने, देखने गए तो देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ 3000 से अधिक महिलाएं कार्य कर रही हैं. यह फैक्ट्री कपड़े का उत्पादन करती है. कपास से लेकर कपड़े सिलाई तक का पूरा कार्य यह ग्रुप करता है. निर्यात में इसने अपना स्थान बनाया है. धुनाई, सफाई, कताई, बुनाई, रंगाई, कढ़ाई, सिलाई आदि सभी कार्य अपनी दृष्टि से स्वयं करते-करवाते हैं. फैसलाबाद कपड़े का दक्षिण एशिया में बड़ा केन्द्र है. रंगाई, धुलाई आदि में यहाँ स्वचालित मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है.

लाहौर से सीधे हम फैसलाबाद के लिए चले. फैसलाबाद जाने के लिए हमने मोटर वे से यात्रा की. लाहौर फैसलाबाद की दूरी लगभग 175 कि.मी. है. दरिया रावी से होते हुए मोटर वे से शाहदरा टाउन, जरियांवाला की नहर, सहलनवाला आदि के रास्ते होते हुए शाम को हम फैसलाबाद पहुंचे. चेनाब क्लब में रात्रि भोजन एवं स्वागत परिचय का दौर चला. सत्यपालजी, सांसद बी.के. त्रिपाठी को साथ लाने के लिए लाहौर रूक गए थे. दल की बागडोर रमेश शर्मा को सौंपी थी. इसलिए चेनाब क्लब में स्वागत के समय परिचय, बातचीत का कार्य रमेश शर्मा ने सम्भाला. दल में दस्तावेजों के लिए श्री राजकुमार चोपड़ा (इलाहाबाद) को तथा नेतृत्व में सहयोग के लिए गांधी शांति प्रतिष्ठान के रमेश शर्मा को जिम्मेवारी सौंपी गई. यह जिम्मेवारी दिल्ली में ही सत्यपालजी ने सौंप दी थी. कार्यक्रम के अंत में सत्यपालजी एवं श्री बी.के. त्रिपाठी भी चेनाब क्लब पहुंच गए. रात्रि पड़ाव का मुख्य स्थान खैयाबान कालोनी नं.-2 मदीना टाउन रहा.

मोटर वे पाकिस्तान की शुल्क वाली सड़के हैं. इनपर टोल देकर वाहन चलते हैं. इनका निर्माण अच्छे, व्यवस्थित ढंग से किया गया है. यह लम्बी दूरी के लिए बहुत उपयोगी एवं सुविधाजनक है. रास्तों में यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान बने हैं. फोन की सुविधा भी जगह जगह पर है. मोटर वे पर धीमी गति के वाहन प्रतिबंधित हैं. मोटर वे अच्छे मानकों पर बनाया गया है. वाहनों की गति भी तेज रहती है. जब मोटर वे पर वाहन आता है तो उसे एक कार्ड लेना होता है. जब भी वाहन मोटर वे से बाहर जाता है तो कार्ड देखकर जितनी दूरी उसने तय की उसके हिसाब से उससे टोल टैक्स (शुल्क) ले लिया जाता है. मोटर वे से पाकिस्तान के लगभग सभी प्रमुख शहर जुड़े हुए हैं. इन पर यात्रा सुगम एवं तेजी से सम्पन्न होती है.

पाकिस्तान के ट्रक बहुत सुंदर सजावट के होते हैं. पेशावर की ओर से आए ट्रकों को सजावट देखकर दूर से ही पहचाना जा सकता है कि यह ट्रक पाकिस्तान के किस हिस्से से है. दुल्हन की तरह सजाए गए ट्रक दूर से ही मन को मोह लेते हैं. मीनाकारी की अद्‌भुत छटा बिखेरते सड़क पर खड़े, दौड़ते यह ट्रक सहज ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं. यह भारत के ट्रकों से एकदम भिन्न नजर आते हैं. इनकी बनावट में

यह स्पष्ट दिखता है. पेशावर के लोग अपने वाहनों की विशेष देखभाल करते हैं. उन्हें बड़े प्यार से ध्यान से सजाकर रखते हैं. ट्रक के सामने का हिस्सा भी अलग बनावट का होता है कुछ आगे को झुका तथा ऊपर उठा हुआ.

लाहौर से फैसलाबाद जाते समय मध्य में हम चाय-पानी के लिए सुखेकी नामक स्थान पर रूके. यहां पर अनमोल पब्लिक स्कूल, फैसलाबाद की छात्राओं का एक जत्था भी

*पाकिस्तानी साथियों के साथ प्रतिनिधिमंडल*

आया हुआ था. जब उन्हें मालूम हुआ कि हम लोग इण्डिया से आए हैं तो उन्होंने बहुत ही सम्मान, अपनेपन से बातचीत कर हम लोगों को अपने स्कूल आने का न्यौता दिया. हमारे साथ लाला लाजपतराय के जन्म स्थल डुडीके गांव के सरदार श्री अमरसिंह एवं श्री रणजीत सिंह भी थे. श्री अमर सिंह ने बच्चों से बातचीत कर जल्दी ही उनपर अपना प्रभाव छोड़ा. जाते समय छात्राओं ने जो बोले सो निहाल सत श्री अकाल के नारों से विदाई दी. इसी स्थान पर सरगोधा के लोग भी बड़ी तादाद में उपस्थित थे. उनसे भी बातचीत का अच्छा अवसर बना. पाकिस्तान का दर्शन करने का यह अवसर बना. जहां हम नहीं जा रहे थे वहां के लोगों से भी मिलने का अवसर मिल गया. इनकी वेशभूषा, चेहरे से पहचाना जा सकता है कि यह लोग किस क्षेत्र के हैं. भाषा की टोन भी अलग पकड़ में आती है. दूर से इनकी अलग पहचान नजर आती है. ग्रुप ने इनके साथ बातचीत

बस में साथ सफर कर रही डॉ. हाजरा तारिक, सदर्फ, सकिला ने जब च्लट्ठे दी चद्दर उते सलेटी रंग माइयां, आओजी सामने कोलो दी रूस के ना लंग माइयांछ गाना शुरू किया तो भारत की बहनों -भाई ने भी अपने स्वर साथ मिलाएं. यह साझा संस्कृति का एक और उदाहरण कुछ ही समय में प्रस्तुत हुआ.

पाकिस्तान में शिक्षा को लेकर पिछले कुछ वर्षों से एक हलचल शुरू हुई है. शिक्षा के बारे में सरकार, जनता एवं औद्योगिक घराने भी सक्रिय हुए हैं. मदीना ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज जो चीनी, टेक्सटाईल आदि उद्योगों से जुड़े हैं ने चार वर्ष पूर्व मदीना फाउण्डेशन की ओर से यूनिवर्सिटी ऑफ फैसलाबाद का 100 एकड़ जमीन पर निर्माण किया है. विश्वविद्यालय के पास पर्याप्त जमीन एवं भवन है. निर्माण कार्य अभी भी जारी है. मैंनेजमेंट, इंजिनियरिंग, कम्प्यूटर साईन्स, फैशन डिजाईन आदि के कोर्स विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाते हैं. एक आँखों का अस्पताल भी परिसर में बनाया गया है. मदीना मेडिकल सेन्टर के माध्यम से गरीबों को विशेष सुविधा दी जाती है. हॉस्टल की सुविधा भी उपलब्ध है. यहॉ फैकल्टी (संकाय) में 84 सदस्य हैं. देश-विदेश से सहयोग लेकर विश्वविद्यालय को आगे बढाना चाहते हैं. अभी चार सौ से अधिक छात्र हैं. भारत से चाहते हैं कि विजिटिंग प्रोफेसर एवं अन्य माध्यमों से सहयोग प्राप्त हो. नागरिक पहल की दृष्टि से इस तरह के कुछ प्रयास यहां शुरू हुए हैं. यादगार में प्रतिनिधिमंडल की ओर से परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया.

चेनाब क्लब की स्थापना 1910 में हुई थी. फैसलाबाद पहुंचते ही हमारा पहला भोजन यहाँ हुआ. इसी स्थान पर लेखकों, शायरों की एक बैठक प्रतिनिधिमंडल के साथ हुई. श्री अंजुम जो स्वयं एक शायर हैं तथा भारत आ भी चुके हैं, ने इस बैठक का आयोजन किया. इसमें अनेक लोगों ने अपनी बातें कही कि किस तरह गलतफहमी, कठमुल्लापन एवं सियासत की छोटी सोच ने हमारी दूरी बढ़ाई. जिस तरह गंदगी को सैलाब बहा ले जाता है उसी तरह जब जन सैलाब आएगा तो सब बंदिश मिट जाएगी, हट जाएगी. शायरों की शायरी ने भी इसमें अपनी आवाज मिलाते हुए कहा *"एक और सूरज बाल दे माए, मैं सहरा था समन्दर हो गया हूँ तूझसे मिलकर जहॉ से मैं भी कहूं कि यहॉ मुनासिब है"*.

लिबरल फोरम पाकिस्तान ने सेरेना होटल फैसलाबाद में *पाक इण्डिया शांति प्रक्रिया : क्या इसे बदला जा सकता है ?* - पर शांति सम्मेलन का आयोजन किया. सम्मेलन में बड़ी तादाद में महिला-पुरूषों की भागीदारी रही. श्रीमती सैयदा आबिदा हुसैन (अमेरिका में पाकिस्तान की पूर्व राजदूत), डॉ. मुबाशीर हसन (पाक इण्डिया फोरम), श्री सत्यपाल (दक्षिण एशिया विरादरी), श्री बी.के. त्रिपाठी (सांसद एवं पूर्व इस्पात मंत्री), डॉ. मालती थापर (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री पंजाब), रमेश शर्मा (गांधी शांति प्रतिष्ठान), श्री आई.ए. रहमान (निदेशक, मानवाधिकार आयोग पाकिस्तान), सरदार मुहम्मद लतीफ खोसा (सीनेटर) एवं जर्मनी के पीटर एण्डरीस बोचमन आदि ने सम्मेलन को मुख्य रूप से सम्बोधित किया. सम्मेलन ने मांग रखी कि सीमा को नरम किया जाए, खोला जाए . वीसा आदि की पाबंदिया कम की जाएं और ज्यादा वीसा दिए जाए. रक्षा बजट को कम किया जाए. व्यापार को बढाया जाए. सीमा पर अलग-अलग स्थानों पर आने जाने की सुविधा बनाई जाए. शैक्षणिक, व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्र में सहयोग के दरवाजे खोले जाएं. वाहनों का आना-जाना शुरू किया जाए. वीसा पूरे देश का लागू किया जाए. पुलिस रिर्पोटिंग बंद की जाए. इन सबके बावजूद भी कहीं-कहीं लगता है कि मन में शक है. इस शक को कम करने के प्रयास दोनों ओर से होने चाहिए.

*शांति सम्मेलन, फैसलाबाद (लायलपुर) में प्रतिनिधिगण*

सम्मेलन में दोनों ओर के वक्ताओं ने कहा कि हमारी दूरी का फायदा अन्य मजबूत देश उठा रहे हैं. दोनों देशों पर दबाब बनाया जाता है. दोनों का शोषण किया जाता है. दोनों देशों को हथियारों की मंडी बनाया जाता है. ऐसे में हमें सतर्कता, सावधानी बरतनी चाहिए. इस स्थिति से बचने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा. दक्षिण एशिया में शांति होती है और सभी देश मिलकर काम करते हैं तो दक्षिण एशिया एक शक्ति के रूप

"स्थिति यह है कि सड़क हमारी गाड़ी उनकी, फौज हमारी हथियार उनके, जुबान हमारी बोली उनकी, दिमाग हमारा सोच उनकी, मन हमारा चाह उनकी, देश हमारा नीति उनकी, काम हमारा उत्पादन उनका, राज्य हमारा कानून उनके, मेहनत हमारी लाभ उनका, हथियार उनके बेटे हमारे, जीवन उनका मौत हमारी. इस स्थिति को लाने के लिए दुनिया का सबसे मजबूत मानेजाने वाला व्यक्ति, देश प्रयास कर रहा है. हमारी दुश्मनी से वह फायदा उठा रहा है. हम आज भी चेत जाए तो राह मिल सकती है. अन्यथा सबकुछ लुटा के होश में आएं तो क्या हुआ ? इससे बचने के लिए हमें नया इतिहास बनाना है. अपनी जीवन पद्धति पर विचार करना होगा. जीवन पद्धति बदलनी भी होगी. सच्चा लोकतंत्र हमें राह दिखाएगा. जनता की आवाज शक्ति बनाएगी. राज्य शक्ति पर लोक शक्ति का अंकुश लगेगा तभी शांति, सौहार्द का काम आगे बढेगा. हमारा दुख-सुख, मसले, समस्या साझा हैं. हम मिलकर इनसे निबट सकते हैं".

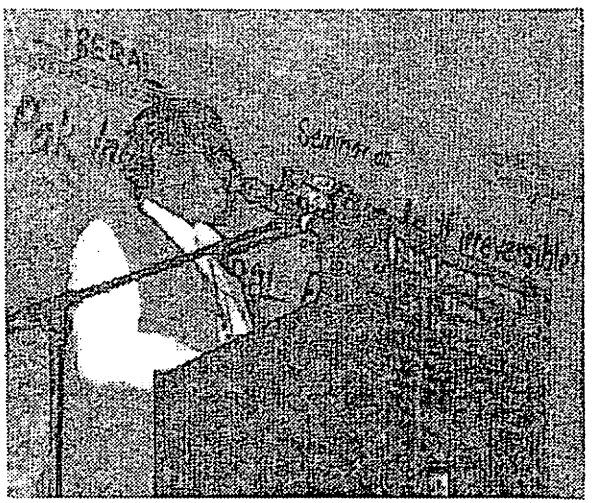

*शांति सम्मेलन में श्री रमेश शर्मा अपने विचार प्रकट करते हुए.*

शिक्षा, व्यापार, समाज के साथ-साथ पत्रकार भी अमन की आवाज में शामिल रहे. फैसलाबाद प्रेस क्लब में पत्रकारों के साथ एक शानदार बैठक हुई. फैसलाबाद का प्रेस क्लब का निर्माण कार्य जारी है. फिर भी वहाँ बैठक आयोजित की. प्रतिनिधिमंडल का पत्रकार साथियों ने खुलकर स्वागत किया. अमन की आवाज उठाने में मीडिया की अहम भूमिका है. मीडिया लोकतंत्र का चौथा खंभा है. मीडिया चाहे तो सक्रिय सकारात्मक भूमिका निभा सकता है. अनेक तरह के दबाब हैं फिर भी इनसे ऊपर उठा जा सकता है.

फैसलाबाद को लायलपुर के नाम से भी जाना जाता है. 100 वर्ष से भी ज्यादा पुराना शहर है. आजादी से पूर्व इसमें सिक्ख-हिन्दू ज्यादा रहते थे. इस शहर के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण एवं बड़ा योगदान रहा है. इसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता. यह शहर सिक्ख-हिन्दू-मुस्लिम सबके साझे सहयोग से वजूद में आया. आपकी अमन की जदोजहद जरूर रंग लाएगी. हम आपके साथ हैं. यह विचार पत्रकारों की जमात की ओर से सुनकर मन को सुकुन मिला.

पत्रकार बैठक से सीधे प्रतिनिधिमंडल माएँ दी झुग्गी इलाके में गया. यहाँ आम जनता के मध्य भी अमन की चाहत साफ तौर पर देखी जा सकती है. बच्चों, युवाओं एवं वृद्धों सभी ने शांति-अमन-चैन की बात में अपनी आवाज मिलाई. ढ़ोल-नगाड़ों की थाप पर यहाँ भी प्रतिनिधिमंडल का भव्य स्वागत किया गया. सड़क पर भारी भीड़ जमा हो गई. कुछ बच्चे स्मृति चिन्ह के रूप में भारतीय सिक्के अपने पास रखना चाहते हैं. इसलिए उन्हें सिक्के दिए गए. अचानक फजल नाम के बच्चे ने जब हाथ पकड़कर कहा *"तुसी इण्डिया तो आएँ हो मैं इण्डिया जाना चाहदां हूँ"* फजल के दादा इण्डिया में रहे थे. दादा की जमीन को चूमने की चाह इस बच्चे के मन में सपने की तरह पल रही है. इसका सपना जरूर सच होगा. माहौल बन रहा है. इस तरह की अनेक घटनाएँ घटी जिनकी चर्चा कहाँ तक की जाए. इस बस्ती में आकर बहुत ही अच्छा लगा. यहाँ भी वही प्यार, वही अमन की बातें. इस क्षेत्र में पावरलूम का काम देखा. कपड़ा बनाने में लोग जुटे हैं.

फैसलाबाद के फैशन डिजाईन इंस्टिच्यूट में सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया. दोनों देशों के कलाकारों ने नाटक, संगीत, नृत्य का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया. पाकिस्तान की ओर से हास्य-व्यंग से पूर्ण अनारकली नाटक का मंचन किया गया. भारत की ओर से काबेरी ने दशावतार तथा चितरंजन ने कृष्ण बाल लीला एवं पी-कोक डांस (मोर नृत्य) पेश किया. चितरंजन ने मोर नृत्य पाकिस्तान के उस्ताद सागा से सीखा और उन्हें कृष्ण लीला सिंखाई. आज वे उस्ताद हमारे बीच नहीं हैं. उनकी धरती पर उनका सिखाया हुआ नृत्य प्रस्तुत करने के बाद चितरंजन बहुत ही भावुक हो गया. तीनों नृत्यों का लोगों ने आनन्द लिया. तालियों की गड़गड़ाहट से साबित हुआ कि लोगों ने नृत्य को

फैसलाबाद (*लायलपुर) को यूनीयन जैक की तरह बनाया गया है. मध्य में घंटाघर है तथा इसके चारो ओर आठ सड़कें बनी हैं जिनमें बाजार है. एक सड़क पर एक सामग्री का बाजार. एक सड़क चौड़ी दूसरी थोड़ी कम, इस प्रकार चार चौड़ी सड़कें तथा चार कम चौड़ी सड़कें अर्थात  बाजार है. रेल बाजार, कचहरी बाजार, चिनोट बाजार, झंग बाजार, कारखाना बाजार, अमीरपुर बाजार, अनारकली बाजार आदि बाजार (मार्केट) रात देर तक खुले रहते हैं. आधी रात के समय भी बाजार में सहजता से महिला, बच्चे घूमते, खाते-पीते, सामान खरीदते नजर आते हैं. कुछ दुकानों के बाहर कुर्सियाँ पड़ी हैं आप आराम से बैठकर कुल्फी, ठण्डा, आइसक्रीम या खाने की अन्य वस्तुओं का आनन्द (लुत्फ) उठा सकते हैं. एक बाजार में कपड़ों की रंगीन छटा बिखर रही है तो दूसरी ओर गहनों की चमक दमक नजर आती है. एक में फल-सब्जी है तो दूसरे में खाने-पीने की सामग्री इस तरह हर बाजार अपनी विशेषता लिए हुए है. घंटाघर बीच में खड़ा सारे बाजारों की रौनक देखता है तथा अपनी उपस्थिति से बाजारों की रौनक बढ़ा रहा है.

रात के समय लोग उसी सहजता, सरलता से आते हैं कोई घंटाघर तो कोई डी मार्केट में. डी मार्केट भी रात देर तक खुला रहता है. दुकाने ही नहीं शहर भी रात देर तक जागता है. लाहौर में भी यही परम्परा है. सड़क पर चहल-पहल बनी रहती है. एडवोकेट अमज़द हुसैन मलिक की गाड़ी से घंटाघर पर जब हम रात को उतरे तो मैने गाड़ी लॉक करनी चाही तो उन्होंने कहा कोई जरूरत नहीं है. गाड़ी में कई साथियों का सामान, पैकेट रखे थे इसलिए मैंने एक बार और उनसे कहा कि क्या गाड़ी बंद करना अच्छा होगा तो उन्होंने बड़े ही सहज भाव से कहा यहॉ कोई डर या चिंता नहीं है. आप बेफ़िक्र रहें, कोई गुस्ताखी नहीं होगी. यह है पाकिस्तान का फैसलाबाद. फैसला अब आपके हाथ में है. पाकिस्तान की कौन सी तस्वीर आप अपने दिल में रखते हैं.

ननकाना साहिब पाकिस्तान में एक ऐसा स्थान है जहाँ भारत से जानेवाले के मन में यहाँ मत्था टेकने की बेहद इच्छा रहती है. ननकाना साहिब गुरू नानक का जन्म स्थल है. यहॉ एक गुरूद्वारा बना हुआ है. सिक्ख भाईयों में तो इसके प्रति एक विशेष लगाव व अपनापन है ही हिन्दू भी यहाँ जाना अपना सौभाग्य मानते हैं. पंजाबी संस्कृति के जानने-

फैसलाबाद से शेखपुरा रोड, शाहकोट मोड़, शाहकोट से एक रास्ता लाहौर जाता है तथा एक ननकाना. हम ननकाना पहुँचे. ननकाना साहिब गुरूद्वारा का अपना इतिहास रहा है. इतिहास बताता है कि यहाँ एक घटना घटित हुई, रविवार 21 फरवरी, 1921 को गुरूद्वारा मुक्ति के लिए भाई लक्ष्मण प्रसाद के नेतृत्व में एक जत्था यहाँ आया. यहाँ श्री दलीपसिंह शहीद हुए तथा श्री लक्ष्मण प्रसाद को पेड़ पर बांधकर जलाया गया. इतिहास में क्रूरता, हिंसा की घटनाएँ हैं तो प्यार, त्याग, तपस्या, सहनशीलता की भी

*प्रेम और आस्था का प्रतिक ननकाना (गुरूनानक का जन्म स्थल) साहिब गुरूद्वारा*

घटनाएँ हैं हम किसे याद रखते हैं, रखना चाहते हैं. सिक्ख इतिहास त्याग, सेवा, बलिदान से भरा हुआ है.

बारबटन (मंडी), फिरोज बटवा, बीखी, शेखपुरा होते हुए ननकाना से लाहौर आते समय थोड़ी देर के लिए हम चांद बाग स्कूल में रूके. चांद बाग स्कूल पाकिस्तान का संभवत: सबसे महँगा स्कूल है. 15,000 रूपये फीस है. 450 एकड़ जमीन में फैला यह स्कूल देहरादून के दून स्कूल की तरह बनाने का प्रयास है. इसका नाम भी दून स्कूल पाकिस्तान रखने की चाह थी मगर वह संभव नहीं हुआ. इसलिए इसका नाम चाँद बाग रखा गया. देहरादून में दून स्कूल जिस जमीन पर बना है उसका नाम चांद बाग है इसी कारण से दून नहीं तो चांद बाग सही यह मानकर इसका नाम चांद बाग स्कूल रखा गया. चाँद बाग स्कूल आवासीय स्कूल है. अभी लगभग 550 बच्चे हैं. साप्ताहिक श्रमदान

साथ खेत भी है. दून स्कूल में गवर्नर जनाब जिलानी पढे थे. उसी के अनुकूल उन्होंने पाकिस्तान में स्कूल बनाने का विचार बनाया. उसी सपने का साकार मूर्तरूप यह स्कूल है. यहाँ हम श्री नाजीर कैसर, श्रीमती आफता कैसर, सुश्री तजदीद, चि. अजीज परिवार से मिले. श्री नाजीर कैसर ने हरे कृष्ण (गीता के आधार पर) एक लम्बी कविता लिखी है. इस विद्यालय परिवार को गाँधी चित्र एवं अन्य गाँधी साहित्य भेंट करने का सुअवसर मिला.

*चाँदबाग स्कूल परिवार : श्री नाजीर कैसर और उनकी बेगम मोहतरमा आफता कैसर के साथ रमेश शर्मा.*

आजादी के इतिहास में लाहौर की खूब चर्चा आती है. लाहौर एक प्रसिद्ध शहर रहा है. लाहौर की अपनी यादें, अपना इतिहास रहा है. लाला लाजपतराय , भगत सिंह जैसे अनेक आजादी के दीवानों के इस शहर के बारे में कहा जाता है कि जिसने लाहौर नहीं देखा वह जन्मा ही क्यों ? आजादी की लड़ाई, शिक्षा, संस्कृति, साहित्य के लिए भी लाहौर को याद किया जाता है. लाहौर का साझा संस्कृति का इतिहास रहा है. इस शहर में पहुँचे. यहाँ भी अनेक कार्यक्रम हुए.

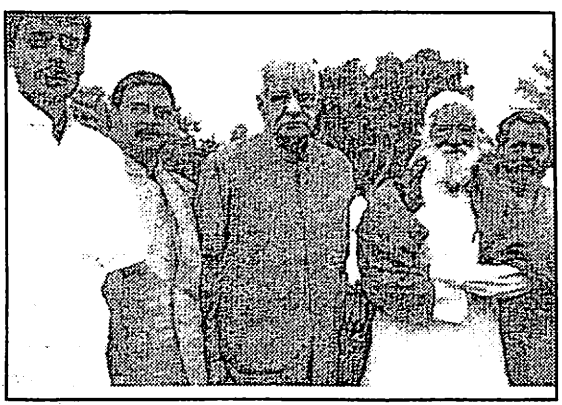

*लाहौर में शहीद भगतसिंह के समाधिस्थल पर पर्यावरणविद श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, वरिष्ठ पत्रकार श्री कुलदीप नैयर*

23 मार्च को पाकिस्तान में राष्ट्रीय दिवस मनाया गया. पाकिस्तान का प्रस्ताव पास हुए 100 वर्ष हो गए इसलिए इस बार बड़े कार्यक्रम आयोजित हुए. 23 मार्च शहीद भगतसिंह का शहादत दिवस भी है. इस बार 75वाँ शहादत दिवस रहा इसलिए कुछ ज्यादा कार्यक्रम बनाए गए. 23 मार्च को पाकिस्तान का राष्ट्रीय दिवस था इसलिए जहाँ शहीद भगत सिंह को फाँसी लगाई गई थी उस स्थल पर श्रद्धा सुमन चढ़ाने का विचार श्री कुलदीप नैयर, जस्टिस राजेन्द्र सच्चर आदि ने सोचा और 24 मार्च को उस स्थल पर एकत्र हुए जिस स्थान पर कभी जेल थी. अब यहाँ एक चौराहा है जिसे शादमां कॉलोनी के गोल चक्कर के नाम से जाना जाता है. यहाँ गोल घेरे में एक फव्वारा बना हुआ है. यहाँ एकत्र होकर श्रद्धा सुमन चढ़ाए गए तथा मांग की गई कि भगतसिंह की याद में इस स्थान को सुरक्षित कर यादगार बनाया जाए. यह अब बस्ती के मध्य है.

वर्ल्ड पीस फाउण्डेशन की ओर से एवारी होटल में आजादी के आंदोलन के शहीदों की याद में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया. इसकी सदारत जनाब जलील अहमद खान ने की. वक्ताओं में वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर, जस्टिस राजेन्द्र सच्चर, सांसद प्रसन्न पातसानी, सांसद बी.के. त्रिपाठी, डॉ. मालती थापर, दक्षिण एशिया बिरादरी के सत्यपाल, आमीन खान, जस्टिस मलिक, मोहतरमा बुसरा रहमान, श्री कामिलअली आगा आदि ने अपने विचार रखे. लगभग सभी वक्ता साझा-संस्कृति, अमन-चैन की भाषा बोल रहे थे. अमन चाहिए जंग नहीं. इसी मध्य श्री आगा ने जो सियासतगार भी हैं ने पाकिस्तान के कदमों की चर्चा करते हुए वार्ता आदि को एकपक्षीय बताने की बात कही. साथ ही कहा कि जंग जरूर होगी. हमने बम देखने के लिए नहीं बनाए इनका प्रयोग होगा. इसलिए किसी तरह की गलतफहमी मन

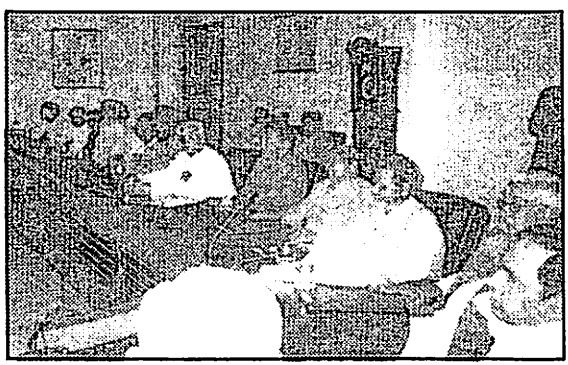

*फैसलाबाद विश्वविद्यालय में प्रतिनिधिमंडल*

में नहीं रहनी चाहिए. इनके बाद बोलने आए समझौता एक्सप्रेस पुस्तक के लेखक एवं एडवोकेट अवास शेख ने जोरदार शब्दों में पूर्व वक्ता की बात को काटा और अमन चैन की बात कही, इसपर श्रोताओं में भी एक हलचल मची ज्यादातर लोग अमन चैन की बात करने, कहनेवाले थे. थोड़े ही सही मगर जंग चाहनेवालों की उपस्थिति भी नजर आई. यह सवाल भी उठा कि भारत का रक्षा बजट पाकिस्तान के कुल बजट के बराबर है. ऐसे में अमन की क्या बात की जाए. स्पष्टीकरण दिया गया कि पाकिस्तान अपने सूबों की संख्या और भारत के सूबों की संख्या को तथा जनसंख्या को भी ध्यान में रखे. भारत के 30 सूबे तथा पाकिस्तान के चार सूबे हैं. दोनों देशों को हथियार की होड़ से बचना चाहिए. दोनों देशों का हित इसी में है. जनरल परवेज मुशर्रफ ने शिक्षा सहित कुछ क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया है इसलिए माहौल में बदलाव आ रहा है, आएगा. कश्मीर मुद्दे को भी कुछ लोग जीवित रखने में अपनी भलाई देख रहे हैं. पानी की समस्या को लेकर भी चिंता बताई गई. कुछ नदियाँ सूख रही हैं. दोनों तरफ कुछ ऐसे लोग हैं जो ऐसी भाषा बोलते हैं, जिसमें से नफरत - द्वेष झलकता है. वे अमन, चैन, संवाद, सम्पर्क से ज्यादा डरते हैं हथियार से कम. उनकी तादाद कम हो मगर वे हैं. अच्छी बात यह है कि अमन, चैन, संवाद चाहनेवाले भी अब चुप नहीं बैठे हैं, वे मुखर हो रहे हैं, सक्रिय हुए हैं. जनता तक उनकी बात पहुँच रही है. जनता सच्चाई को जानने लगी है. उसके लिए हाथ-पाँव हिलाने की भी तैयारी कर रही है. जनता की आवाज, सक्रियता को देखकर विश्वास जगता है कि दोनों देशों की दूरी कम होगी. आपसी आदान-प्रदान, व्यापार, शिक्षा, यात्रा, संचार, डाक आदि की व्यवस्था में बदलाव आएगा.

हजारों मील फोन करना सस्ता मगर कुछ मील की दूरी पर फोन करना कई गुना मँहगा. यह बात समझ नहीं आती. अमेरिका-यूरोप का फोन सस्ता मगर पाकिस्तान भारत फोन करना मँहगा. सूचना क्रांति के युग में भारत-पाक में सूचना-संचार की यह स्थिति उचित एवं उपयोगी नहीं है. इसमें भारी बदलाव की जरूरत है. दोनों देशों की जनता की भलाई इसी में है कि इन्हें उदार एवं सस्ता किया जाए. दोनों देशों की स्थिति ऐसी है कि यहाँ तो स्थानीय दरें ही लागू की जा सकती हैं. क्या अमृतसर-क्या लाहौर ? इसी तरह भारत पाक की सीमा के स्थानों की दूरी बहुत ही कम है. इसपर तुरंत कदम उठाने की जरूरत है.

लाहौर में श्री सुन्दरलाल बहुगुणा एवं श्रीमती बिमला बहुगुणा भी मिले. श्री सुन्दरलालजी ने बताया कि वे लाहौर में ही पढ़े तथा लायलपुर में आजादी की लड़ाई में सरदार बनकर भूमिगत रहे. उन्होंने कहा जहाँ मैंने शिक्षण, ज्ञान प्राप्त किया वहाँ मैं तीर्थ पर आया हूँ. वक्ताओं ने विनोबाजी के ए.बी.सी. त्रिभुज की बात भी याद दिलवाई कि अफगानिस्तान, बर्मा (म्यांमार), सीलोन (श्रीलंका) के क्षेत्र को एक महासंघ के रूप में उभारा जाए. जहाँ की अधिकतर बातें साझी हैं. यह रूप अगर दक्षिण एशिया का उभरता है तो दुनिया में एक नई शक्ति का उभार होगा. अमन-चैन-शांति का वातावरण बनेगा. यहाँ भी शांति, विकास की राह खुलेगी तथा विश्व शांति में उभार होगा.

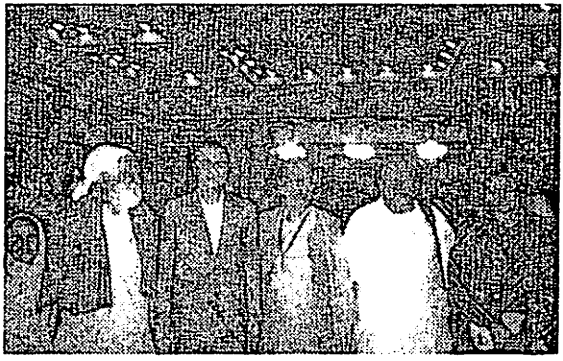

*लाहौर के गुलजार हाउस में सिनेटर के साथ*

लाहौर सुंदर शहर है. फूड स्ट्रीट, अनारकली बाजार, शाही मस्जिद, लाहौर का किला, रणजीतसिंह की समाधि, मीनारे-पाकिस्तान, लालालाजपतराय भवन, भगतसिंह शहीद स्थल आदि अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ जाने की इच्छा सहज ही उत्पन्न होती है. शहर के मध्य में बहती नहर और इसके दोनों ओर सड़कें रौनक को और बढ़ाती हैं. लाहौर की पंजाबी संस्कृति इसमें और चार चाँद लगा देती है. लोगों का प्यार, अपनापन मन को मोह लेता है.

लाला लाजपतराय भवन की नींव पूज्यपाद पं. मदन मोहन मालवीयजी के कर कमलों से 25 मार्च, 1928 को रखी गई. लाला लाजपतराय ने लोक सेवक मंडल की स्थापना लाहौर में 1921 में की थी. लालाजी का अंतिम भाषण मोरी गेट पर हुआ था जहाँ से उन्होंने गम्भीर, सशक्त आवाज में अंग्रेजों को खुली चुनौती दी थी. इसी मध्य लालाजी

पत्थर लगे हैं. एक पर लिखा है कि पूज्यपाद पं. मदन मोहन मालवीयजी के कर कमलों से 25 मार्च, 1928 को नींव रखी गई. दूसरे पर लिखा है यह भवन पौष कृष्णा 09 सं. 1986, 24 दिसम्बर 1929 को पूज्यपाद महात्मा गाँधीजी ने अपने कर कमलों से खोला. प्रतिनिधिमंडल ने शहीदों की स्मृति में यहाँ का दौरा किया. लाला लाजपत राय भवन में अब सरकार का कब्जा है. लाजपत राय भवन पर लोक सेवक मंडल का पत्थर आज भी लगा है. अंदर बरामदे में पं. मदनमोहन मालवीय तथा महात्मा गाँधी के नाम के पत्थर भी अभी तक लगे हुए हैं जो इतिहास की याद दिला रहे हैं. इस भवन के सामने अग्रवाल आश्रम था. पास में ही डी.ए.वी. कॉलेज. आज इसका नाम बदलकर गवर्नमेंट इस्लामिक कॉलेज कर दिया गया. इस कॉलेज के सामने आज भी सीनियर सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस (एस.एस.पी) का कार्यालय है जहाँ भगतसिंह ने सान्डर्स पर गोली चलाई थी.

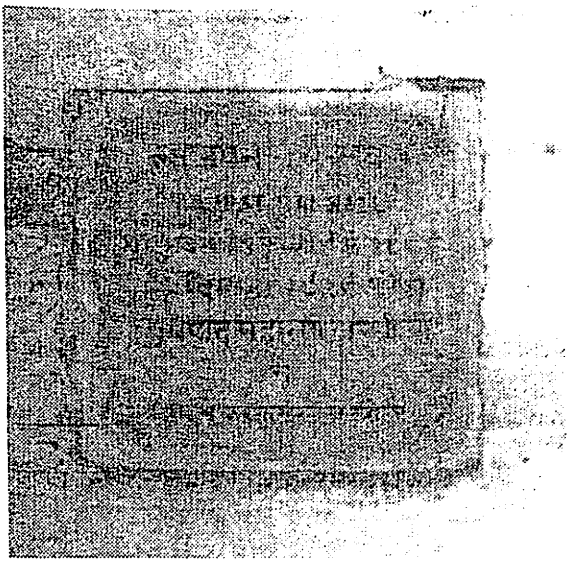

*लाहौर में शिलालेख : १९२९ में गाँधीजी द्वारा उदघाटित लाजपतराय भवन*

पाकिस्तान के लाहौर शहर में शाही मस्जिद, महाराज रणजीतसिंह की समाधि, लाहौर किले के सामने सड़क पार एक मीनार खड़ी है. जिसका नाम है - मीनारे पाकिस्तान. इस गोल मीनार पर चारो ओर उर्दू-अंग्रेजी में लिखा हुआ है. पाकिस्तान प्रस्ताव को संगमरमर के पत्थर पर अंग्रेजी में भी लिखा गया है. मीनार के चारो ओर खुला स्थान है. मीनार के आस पास खड़े होकर आप शाही मस्जिद, महाराजा रणजीतसिंह की समाधि, किले का

नजारा देख सकते हैं. रात के समय यह दृश्य प्रकाश व्यवस्था के कारण और भी अधिक सुंदर, आकर्षक लगता है. आल इण्डिया मुस्लिम लीग के 22 से 24 मार्च, 1940 को लाहौर में हुए सेशन में पाकिस्तान प्रस्ताव को लाहौर प्रस्ताव में दोहराया गया.

मीनारे पाकिस्तान के सामने हम कुछ साथी खड़े थे. पाकिस्तान के पीण्ड (गाँव) की एक महिला मुमताज मेरे पास आई और कहा मैं इण्डिया जाना चाहती हूँ, कितना खर्चा आएगा ? कैसे होगा ? आदि कई प्रश्न एक साथ पूछ डाले. अपने प्रश्नों की झड़ी के साथ ही कहा मगर इण्डिया में मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है किसके पास जाऊं ? बगैर रिश्तेदारों के जाने ही नही देंगे. मैंने अपना पता मुमताज बेगम को दिया और कहा इण्डिया में आपका स्वागत है. उन्होंने तुरंत अपना मोबाईल फोन निकाला और मेरा मोबाईल नम्बर मांगा.

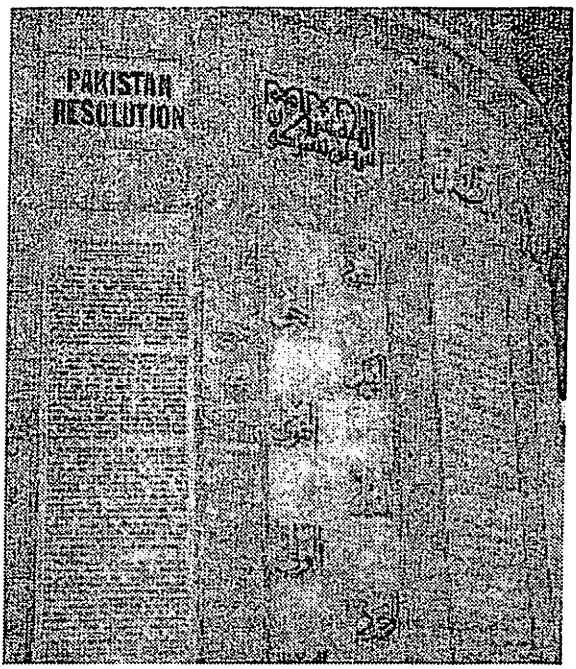

*लाहौर में मिनारे पाकिस्तान पर अंकित पाकिस्तान प्रस्ताव*

मेरे पास मोबाईल नहीं है यह जानकर वह थोड़ा चौकी. इण्डिया आनेवालों की एक लम्बी सूची है. ऐसी ही स्थिति भारत के कुछ लोगों की भी है. दोनों सरकारों को सीमा को जगह-जगह खोल देना चाहिए. जनता का आना-जाना सुगम सुविधाजनक, आसान कर देना चाहिए. भारत-पाक दोस्ती बढ़ेगी, अमन चैन आएगा.

कायदे-आजम की सदारत में 09 अप्रेल, 1946 को दिल्ली में हुए मुस्लिम लीग के सम्मेलन में जिसमें केन्द्र एवं प्रदेश के चुने हुए एम.एल.ए. (विधायको) ने भाग लिया, ने 1940 के पाकिस्तान प्रस्ताव को पुनः एक प्रस्ताव के माध्यम से सर्व सहमति से स्पष्ट किया. जो भी हुआ आज पाकिस्तान एक सच्चाई है. दोनों देशों को पड़ोसी के नाते अच्छे ढंग से रहने, बर्ताव करने की कला सीखनी होगी. अन्यथा दोनों को शोषण बर्बादी का सामना करते रहना पड़ेगा.

लाहौर भी रात को देरी तक जागनेवाला शहर है. फूड स्ट्रीट में दुकानों के अंदर तथा बाहर सामने लगी मेज कुर्सियों पर आपको देर रात तक खाने का लुत्फ उठाते लोग मिल जाऐंगे वो भी सपरिवार, बाल-बच्चों, महिलाओं सहित. गली में घुसते ही आपको निमंत्रण मिलेगा जनाब आईए. खाली मेज कुर्सी की ओर ईशारा करते लोग आपको अपनी ओर आने-खाने की दावत देते दिखेंगे. कोने की दुकान पर आपको मिट्टी के कुल्हड़ से खिरनी (खीर) खाने को मिलती है. कुल्हड़ों में जमी हुई यह खिरनी एक दूसरे के ऊपर इस तरह रखी जाती है कि जब उठाकर आपको दी जाएगी तो दो कुल्हड़ आऐंगे. पास में ही कुल्फी की दुकान भी आपको ललचाती है.

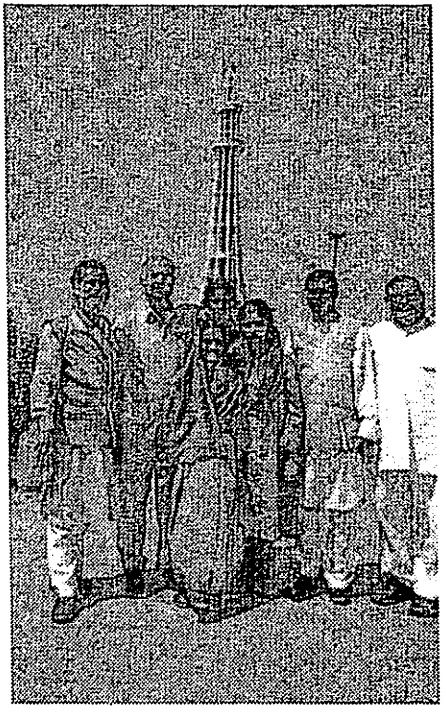

*मिनारे पाकिस्तान पर शांति दल*

फिर पास ही पान की दुकान. खाने के बाद पान चाहिए तो फूड स्ट्रीट में घुसते ही पहले पान भी उपलब्ध है. शाकाहारी के लिए यहाँ सोचना पड़ेगा मगर मांसाहारी के लिए अनेक पसन्दगी की चीजें उपलब्ध हैं. आप अपने ढंग से लुत्फ उठाईये.

अनारकली बाजार लाहौर का प्रसिद्ध एवं भीड़भाड़ वाला क्षेत्र है. गली-कुचे, छोटे-बड़े, खुले -संकरे सभी तरह के बाजार. बाजार में बाजार. एक गली से दूसरी गली में घूमते आप घंटों लगा सकते हैं. कपड़ा, गहना, सजावट, पुस्तकें, साईकिल, खिलौने-जूते-चप्पल से लेकर तरह-तरह का सामान आपको यहाँ मिलता है. दुकानें छोटी-छोटी एवं बड़ी-बड़ी सब तरह की हैं. कुछ दुकानों पर बोर्ड लगा था केवल महिलाओं के लिए. मगर दुकानदार, विक्रेता पुरूष थे. फिर भी कुछ पुरूष महिला ग्राहक के साथ जा रहे थे उन्हें किसी ने रोका नहीं जबकि कुछ पुरूष जो स्वयं अनुशासित एवं संवेदनशील हैं उन्होंने बोर्ड पढ़ने पर बाहर रहना ही उचित समझा और अपने परिवार या महिला साथी का इंतजार दुकान के बाहर खड़े होकर कर रहे थे.

अनारकली में उर्दू बाजार पुस्तकों के लिए प्रसिद्ध है. साईकिल, मोटर-साईकिल, स्कूटर, मोटर साईकिल, ठेला, गधा गाड़ी, खच्चर गाड़ी भी बाजार में जहाँ मुख्य सड़क है आते-जाते रहते हैं. कुछ बड़ी सड़कों पर पार्किंग भी है. पैदल आदमी भी साथ-साथ चल रहा है. हमारी पुरानी दिल्ली से मिलता-जुलता नजारा बनता है. फिर भी कुछ विशेषता भी महसूस होती है. आखिर लाहौर है. गधा गाड़ी पाकिस्तान में खूब चलती है. यहाँ की यह एक विशेषता है. लगभग हर शहर में गधा गाड़ी वाहन का सशक्त माध्यम है.

बाजार के बाद भी एक बैठक अभी और भी शेष थी. कोट लखपत में पिको रोड पर रात को एक कार्यक्रम श्री लारेन्स भट्टी ने सेंट थॉमस स्कूल में रखा था. प्रतिनिधिमंडल वहाँ पहुँचा और स्वागत का फिर वही दौर गुलाबों की माला तथा गुलाब के फूलों, पंखुड़ियों की वर्षा के साथ कार्यक्रम प्रार्थना से प्रारम्भ हुआ. पाक-भारत शांति पहल के एडवोकेट श्री अवास शेख ने अपनी बात रखी कि पाक-हिन्द आजादी को मिलकर मनाया जाए. 14 अगस्त को भारत के साथी लाहौर आकर पाकिस्तान की आजादी में भागीदार बनें तथा 15 अगस्त को पाकिस्तान के साथी अमृतसर में भारत की आजादी में भागीदार बनें. दोनों देश की जनता मिलकर आजादी का जश्न मनाएँ. एक-दूसरे के आजादी के जश्नों में भागीदारी करें. वक्तओं के भाषण के मध्य कुछ साथियों का परिचय भी करवाया गया. इसके बाद गाँधी शांति प्रतिष्ठान के रमेश शर्मा ने ओजस्वी ढंग से विचार रखे. हम सब एक हैं. हमारे मध्य मोहब्बत के चश्मे बहते रहे. अमन-शांति-प्रेम में ही

सबकी भलाई है. दोनों ओर संतो-सूफियों, महात्माओं, पीरों का स्थान है. बाबा फरीद, गुरूनानक, बुल्लेशाह किसको कौन छोड़ सकता है ? पाँच दशक के दर्द को समझकर अब तो सियासत से ऊपर उठना ही होगा. सरकारी नहीं असरकारी काम करना होगा. हमने धरती बांट ली मगर हमारा सुख-दुख साझा है. खाना-पीना , उठना- बैठना, रहना-सहना, बोली, सोच साझी है. हमारी विरासत साझी है. हम कब तक कठपुतली बनकर दूसरों के इशारे पर नाचते रहेंगे. दक्षिण एशिया को नया इतिहास, शांति-अमन का इतिहास लिखना है. यह अवाम से ही सम्भव होगा. अवाम जगेगा तो सरकारें भी जगेगी. यही भावना लेकर हम भारत के विभिन्न सूबों के भाई-बहन आपके पास आए हैं. हमारे साथ पंजाब-हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर, उ.प्र., आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तरांचल के साथी हैं.

अभी और वक्ता बोल ही रहे थे कि जोरदार वर्षा आई और पंडाल में पानी की बौछारें आने लगी. कुछ देर सहन भी किया मगर वर्षा और पानी दोनों की मात्रा गति बढ़ती गई और सबको दौड़कर कमरों में शरण लेनी पड़ी फिर छोटे-छोटे ग्रुपों में चर्चा जारी रही.

*बाघा बॉर्डर पर भारत और पाकिस्तान के साथी*

एक दूसरे से मिलने, बातचीत करने की हलचल का अपना ही आनन्द बन गया. प्रकृति भी अमन चैन के लिए अपना आर्शीवाद इस रूप में प्रकट कर रही थी. वर्षा तेज हवा के रूकने पर सबने भोजन का आनन्द उठाया. इस कार्यक्रम में जनाब मीया अब्दुल वाहीद, उपाध्यक्ष (पंजाब) पाकिस्तान मुस्लिम लीग (क्यू.) ने गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में भाग लिया. वे इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए और कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा कि वे कल प्रतिनिधिमंडल को बाघा बॉर्डर तक विदा करने स्वयं जाऐंगे. बाघा बॉर्डर पर जनाव वाहीद साहब अंतिम छोर तक विदा करने के लिए साथ आए और जबतक हम लोगों ने भारत में प्रवेश किया श्री निसार अहमद चौधरी (सन्नी), श्री लारेन्स भट्टी, श्री सत्यपालजी आदि के साथ वे भी बॉर्डर पर मौजूद रहे.

LIBERAL

Friedrich Naumann Stiftung

The Chairman & Members of Liberal Forum Pakistan

request the pleasure of your Company on auspicious occasion of a Seminar on

" Pak India Peace Process"

Is it irreversible?

Dated. 21st March 2006, Tuesday

Time: 3:30 p m

Venue: Hotal Serena, Faisalabad. (Naqash Hall)

Regrets:
0321-6601991
0300-6626062
0300-8600262

Note: Please bring this card with you

राजस्थान पत्रिका | नई दिल्ली | शनिवार | 18 मार्च, 2006

# पाक जाएगा शांति जत्था

नई दिल्ली, 17 मार्च(एस)। दक्षिण एशिया बिरादरी द्वारा आयोजित शांति सम्मेलन में हिस्सा लेने भारतीय शांति कार्यकर्ताओं का एक जत्था पाकिस्तान के लिए 19 मार्च को दिल्ली से रवाना होगा। बीस मार्च को यह जत्था वाघा बार्डर को पैदल पार कर पाकिस्तान पहुंचेगा। गांधी शांति प्रतिष्ठान के राष्ट्रीय समन्वयक रमेश भाई शर्मा ने बताया कि बिरादरी प्रमुख सतपाल के नेतृत्व में 25 शांति कार्यकर्ता ट्रेन से अमृतसर पहुंचेंगे। वहां से वाघा बार्डर, फिर 20 मार्च को जत्था पैदल चलकर पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश करेगा। जहां बिरादरी के स्थानीय कार्यकर्ता जत्थे का स्वागत करेंगे। फैसलाबाद में आयोजित 21-22 मार्च के शांति सम्मेलन में हिस्सा लेने के बाद जत्था ननकाना साहिब जाएगा और विश्वशांति के लिए प्रार्थना करेगा। वहां स्थानीय लोगों से शांति बहाली पर बातचीत भी की जाएगी। जत्था 24 मार्च को वहां से भारत के लिए वापस रवाना होगा। शर्मा के अनुसार सम्मेलन में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, अफगानिस्तान, म्यामार व भूटान जैसे दक्षिण एशियाई देशों के सैकड़ों शांति कार्यकर्ता हिस्सा ले रहे हैं।

## दक्षिण एशिया बिरादरी सम्मेलन

संस्था दो दशक से दक्षिण एशिया में शांति बहाली के लिए कार्य कर रही है। बिरादरी का मानना है कि महात्मा गांधी के बताए रास्ते पर चल कर ही विश्व में शांति कायम की जा सकती है। भारत से जाने वाले प्रमुख लोगों में सतपाल व रमेश शर्मा के अलावा मालती थापेर (पूर्व मंत्री, पंजाब), श्रीपात सानी (सांसद, उड़ीसा), जगत स्वरूप, राजकुमार चोपड़ा व दीपक मालवीय हैं।

# سارک کے پلیٹ فارم پر جنوبی ایشیا کے ممالک کا اکٹھے ہونا خوش آئند ہے شری ستیاپال

## امن عمل جاری رکھنے کیلئے جدوجہد کرتے رہیں: اعجاز حشمت خان، پریس کلب میں سیمینار سے خطاب

فیصل آباد (سٹاف رپورٹر) پاک انڈیا دوستی کو فروغ دینے اور امن عمل جاری رکھنے کے لیے عوامی تجارتی سیاسی وفود کے تبادلوں کے علاوہ میڈیا کا کردار بھی انتہائی اہمیت کا حامل ہے' میڈیا امن قائم رکھنے اور امن سبوتاژ کرنے کی مکمل اہلیت رکھتا ہے' میڈیا موثر کردار ادا کرے تو دونوں ملکوں کے عوام مزید قریب آ سکتے ہیں۔ ان خیالات کا اظہار فیصل آباد پریس کلب کے زیر اہتمام پاک انڈیا دوستی میں میڈیا کے کردار بارے سیمینار کے دوران پاکستانی و بھارتی دانشوروں' شہریوں اور صحافیوں نے کیا۔ اس موقع پر خطاب کرتے ہوئے صدر سروشس آف پیپلز سوسائٹی شری ستیاپال نے کہا کہ سارک کے پلیٹ فارم پر جنوبی ایشیا کے تمام ممالک کا اکٹھا ہونا خوش آئند ہے مگر اس اتحاد کو مزید آگے بڑھاتے ہوئے یورپی یونین کی طرز پر تمام ممالک کو ایک دوسرے کے لیے اپنی سرحدیں کھول دینی چاہئیں' تجارت سمیت تمام شعبوں میں تعاون بڑھانا ہوگا۔ اس موقع پر بھارتی پنجاب کی سابق وزیر سنت سنگھ ملکی اقتصادی اور تہذیبی طور پر کوئی فرق نہیں ہے' دونوں ملکوں کے عوام ملنا چاہتے ہیں تو انہیں اس کے زیادہ سے زیادہ مواقع فراہم کرنا چاہئیں۔ ڈاکٹر پادان تھاپر نے کہا کہ پاک انڈیا دوستی پہلے سے مضبوط ہو چکی ہے اور مزید مضبوط ہو رہی ہے' میڈیا کو امن کا یہ عمل جاری رکھنے کیلئے اہم کردار ادا کرنا ہوگا۔ صدر فیصل آباد پریس کلب شمس الاسلام ناز نے کہا کہ امن کے لیے کام کرنے والے عظیم لوگ ہیں' فیصل آباد کے صحافی امن کے لیے ہر سطح پر کام کرنے کے لیے تیار ہیں۔ انہوں نے کہا کہ پاک انڈیا دوستی اور امن کے حوالے سے میڈیا کا کردار کسی طور نظر انداز نہیں کیا جا سکتا۔ سینئر صحافی اور روزنامہ خبریں کے ریذیڈنٹ ڈائریکٹر اعجاز حشمت خان نے کہا کہ بھارتی وفد نے اپنی آنکھوں سے دیکھ لیا ہے کہ پاکستان میں کتنی دہشت گردی اور کتنا پیار ہے' اب وہ ہمارا پیغام اپنے ملک کے عوام تک پہنچائیں اور امن کے اس عمل کو جاری رکھنے کے لیے جدوجہد جاری رکھیں۔ کانپور سے آئے ہوئے نوشاد عالم نے کہا کہ دونوں

---

लेखक गाँधी शांति प्रतिष्ठान के तत्वप्रचार केंद्र समन्वयक हैं.

पता: 223, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली 110 002

शांतिमय समाज
Peaceful Society
A Gandhian Voluntary Organisation
KUNDAI 403 115 GOA
Ph:0832-2392236-7,5631059 Fax:2392382
E-mail:peaceful_goa@sancharnet.in
Web:www.peacefulsociety.org/www.goapanchayats.org

Layout & Design: Manoj Tiwari

Rahul Print Shop, Merces, Goa